आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक:-प्रतिदिन

दैनिक समाचार–पत्र

# मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 9 • अंक-2303 • उदयपुर, बुधवार 14 अप्रेल, 2021 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

## समाचार–जगत्
सकारात्मक व जनहितार्थ खबरें

## हमारी फौज दुनिया की चौथी सबसे शक्तिशाली

दुनिया की सबसे शक्तिशाली सेनाओं में भारतीय सेना चौथे नंबर पर है। इसमें तीसरे स्थान पर रूस, दूसरे स्थान पर चीन की सेना हैं। यह खुलासा रक्षा मामलों की वेबसाइट मिलट्री स्ट्रेंथ इंडेक्स स्टडी में हुआ है। दुनिया का सबसे बड़ा सैन्य बजट होने के बावजूद अमरीका 100 में से 74 पॉइंट हासिल कर सका है, जबकि भारत को 61 प्वाइंट मिला है। गौरतलब है कि दुनिया की सबसे ताकतवर सेना को भारतीय सेना ने पूर्वी लद्दाख में घुटने टेकने पर मजबूर कर दिया।

फ्रांस पांचवे नंबर पर... 100 में से अंक 58 के साथ फ्रांस पांचवे, ब्रिटेन 43 अंकों के साथ शक्तिशाली सेना की सूची में 9वें नंबर पर है।

**50 चीजों के विश्लेषण से मूल्यांकन**– स्टडी में देश में रक्षा बजट, सैनिकों की संख्या, परमाणु संसाधनों, औसत वेतन और इक्यूपमेंट, तीनों सेनाओं के लड़ाकू विमान, वाहन, व युद्धक पोतों सहित 50 चीजों का विश्लेषण किया गया है।

**तीन शक्तिशाली देश– अमरीका, रूस, चीन।**

**भारत : आधुनिकीकरण पर फोकस**

• वर्ष 2021–22 में देश का रक्षा बजट 4.78 लाख करोड़ रुपए, ये पिछले वर्ष से 0.8 लाख करोड़ ज्यादा हैं। 19 फीसदी रक्षा बजट खर्च हुआ है। सेनाओं के आधुनिकीकरण के लिए जो 15 सालों में सबसे ज्यादा।

**कौन कहां ताकतवर** – स्टडी के अनुसार चीन की नौसेना, अमरीका की वायुसेना, रूस की थल सेना सबसे शक्तिशाली है।

## 'व्हेल' छोटे हिरण से जलचर में हुई थी तब्दील

दुनिया का सबसे बड़ा जीव यानी 'व्हेल' मौजूदा समय मे भले ही पानी में तैरती हो, लेकिन एक समय ऐसा था जब व्हेल अपने चार पैरों पर चलती थी। यह करीब 5 करोड़ साल पहले हुआ करता था। यह खुलासा हुआ है नोर्थईस्ट आहियो मेडिकल यूनिवर्सिटी के एक शोध में। शोध में सामने आया है कि इतना भारी भरकम जीव उस समय के छोटे हिरण जैसे किसी प्राणी का वंशज है। उसे 'इंडोहियस' कहा जाता था। इस शोध से व्हेल से जुड़ी नई अवधारणा सामने आई है।

**पाक में मिला पुराना जीवाश्म**

इस नई थ्योरी को हेंस थेविसन की खोज से बल मिला है। इसमें पाकिस्तान में एक 4.7 करोड़ साल पुराना जीवाश्म मिला है। जिसमें लोमड़ी जैसे आकार के जानवर के दरियाई घोड़े और फिर व्हेल बनने की थ्योरी बताई गई है।

**यों आया बदलाव**

थेविसन की थ्योरी के मुताबिक 'इंडोहियस' खाने की तलाश में दरियाई घोड़े की तरह पानी में तैरता है। वह शिकारियों से भी बचता है। संभवतया कालांतर में वह थलचर से जलचर में तब्दील हो जाता है।

## सेवा–जगत्
सेवा पथ पर आपका अपना नारायण सेवा संस्थान

## तीन ऑपरेशन के बाद चल पड़ा प्रीत

खेती करके जीवनयापन करने वाले सूरत गुजरात निवासी अजय कुमार पटेल के घर 11 वर्ष पहले प्री मैच्योर बेबी प्रीत का जन्म हुआ। जन्म के 6 माह तक बेबी को नियोनेटल इंटेंसिव केयर यूनिट में रखा गया। गरीब सिान अजय दुःख के तले कर्जदार भी हो गया पर कर भी क्या सकता था। सामान्य हालात होने पर गुजरात के सूरत, राजकोट और अन्य शहरों के प्रसिद्ध हॉस्पीटल्स में दिखाया पर कहीं पर भी उसे ठीक होने का भरोसा नहीं मिला। घर के पड़ोस में रहने वाले राजस्थान निवासियों ने अजय को नारायण सेवा में जाने की सलाह दी। पहली बार 2019 में दिव्यांग प्रीत को लेकर परिजन उदयपुर आए डॉक्टर्स ने ऑपरेशन के लिए परामर्श दिया और एक ऑपरेशन कर दिया। बच्चे का पांव सीधा हो गया। दूसरी बार फरवरी 2020 में संस्थान आये तब उसके दूसरे पांव का ऑपरेशन किया गया। दोनों पांवों के ऑपरेशन के बाद प्रीत वॉकर के सहारे चलने लग गया। इसे देख परिजन पुनः अक्टूबर 2020 में उसे संस्थान में लेकर आए तब तीसरा ऑपरेशन हुआ। अब प्लास्टर खुल चुका है... केलीपर्स व जूते पहनने के बाद प्रीत अपने पांव चलने लगा है। अब वह और उसे परिजन प्रसन्न हैं।

## गीता की आंखों के आंसू पौंछे

उदयपुर (राजस्थान) जिले के आदिवासी बहुत क्षेत्र चारों का फला निवासी गीता बाई 40 का घर संसार आज से 6 वर्ष पूर्व खुशियों को तब तहस नहस कर दिया, जब युवावस्था में ही पति की थोड़े दिनों की बीमारी के बाद आकस्मिक मृत्यु हो गई। तब 34 वर्ष की गीता की गोद में दो नन्हें बच्चे थे।

एक लड़की बड़ी थी जिसके हाथ मेहनत, मजदूरी कर इसने पति की मौत के बाद पीले कर दिए। पिछले 6 वर्षो से यह खेतों, कमठाणों में जहां भी मजदूरी मिली कर लेती है और दोनों बच्चों की परवरिश कर रही है। इन्हें कभी भूखा नहीं सोना पड़ा। लेकिन समय ने एक बार इसके सामने फिर चुनौती नहीं थी, यह तो वैश्विक महामारी कोविड– 19 के रूप में पूरी दुनिया के सम्मुख थी किंतु गरीबों और मजदूरी कोविड़– 19 के रूप पूरी दुनिया के सम्मुख थी किंतु गरीबों और मजदूरों के लिए तो बहुत ही दुःखदायी थी। मार्च–अप्रैल में लॉकडाउन लागू होने से मजदूरी बंद हो गई। काम काज ठप थे। ऐसे में गीता के पास खाने को घर में कुछ दिनों का आटा, मसाला था। वह भी जब खत्म हो गया तो उसकी आंखों में सिर्फ आंसू बचे थे। इस स्थिति में नारायण गरीब परिवार राशन योजना को लेकर संस्थान के सेवादूत उस क्षेत्र में पहुंचे और गीता और उसके जैसे ही गरीब बेरोजगार परिवारों को एक – एक माह का राशन दिया। उन्हें स्थायी रूप से इस सहायता के लिए पंजीकृत भी कर दिया । गीता और उसके बच्चे भी अन्य सहायता प्राप्त परिवारों की तरह खुश हैं। उनके घर हर माह राशन पहुंच रहा है।

# वास्तविक ज्ञान

एक गुरु के आश्रम में कई शिष्य अध्ययन करते थे। हर साल वह परीक्षा लेकर अपने छात्रों को उत्तीर्ण करते थे। लेकिन एक बार एक शिष्य को अनुत्तीर्ण घोषित किया। वह आश्रम में ठहर गया। एक दिन गुरुजी ने उससे कहा, 'तुमने न तो शास्त्रीय ज्ञान अर्जित किया, न ही कुछ कठंस्थ किया। आखिर तुम कब तक इस तरह रहोगे?' शिष्य ने विनम्रतापूर्वक कहा, 'मेरा अपराध क्षमा कीजिए। मैं कुछ ज्ञान हासिल न कर सका। लेकिन कोई न कोई तो होना चाहिए जो आपकी वृद्धावस्था में आपकी सेवा कर सके।' गुरु जी यह सुनकर द्रवित हो गए। एक दिन वह शिष्य गुरुजी को स्नान करा रहा था। वह उनकी पीठ मलते हुए अचानक बोला, 'मंदिर तो बड़ा है पर इसमें भगवान कहीं दिखाई नहीं देते ?'

इस पर क्रोधित होकर बोले, 'तू कैसा शिष्य है। मेरे साथ रहकर मेरा अपमान कर रहा है। यहां से निकल जा।' शिष्य पास में ही झोंपड़ी बनाकर रहने लगा। लेकिन बीच–बीच में वह गुरुजी के दर्शन के लिए आ जाता था। एक दिन जब वह दर्शन के लिए आया तब गुरुजी किसी ग्रंथ का पाठ कर रहे थे। एक मक्खी खिड़की के कांच के बाहर का दृश्य देखती हुई कांच से बार–बार अपना सिर टकरा रही थी। शिष्य ने कहा, 'ठहरो और पीछे देखो।' गुरुजी को क्षण भर के लिए गुस्सा तो आया, फिर भी उन्होंने पीछे मुड़कर देखा। वह सोच में पड़ गए। उन्होंने शिष्य से पूछा, 'तुमने ऐसा क्यो कहा?' शिष्य ने जवाब दिया, 'गुरुदेव यह मक्खी कांच से बाहर जाने के लिए परेशान हो रही है पर यह नहीं जानती कि उसका मार्ग यह नहीं है। उसका मार्ग तो वह है जहाँ से मक्खी आई है।' गुरु चौंक गए। शिष्य ने तो बहुत गूढ़ बात कही थी। उन्होंने उसे गले लगाते हुए कहा, मैं छात्रों को मूल्यांकन मात्र पुस्तकीय ज्ञान के आधार पर करता था मगर तुम्हें तो जीवन के मूल तत्वों का ज्ञान है जो ज्यादा महत्वपूर्ण है।'

# शिष्टाचार और सज्जनता

बच्चों को यह सिखाया जाना चाहिए वह है–नम्रता। सज्जनता, शिष्टाचार, मधुर भाषण, भलमनसाहत– यही तो वह विशेषताएँ हैं, जिनसे आकर्षित होकर दूसरे लोग अपने ऊपर अनुकंपा करते, प्रशंसक बनते और समीपता में प्रसन्नता अनुभव करते हैं। पराये को अपना बनाने का गुण केवल मात्र सज्जनता के व्यवहार में ही सन्निहित है। अनुदार, रूखे, कर्कश, अशिष्ट कटुभाषी व्यक्ति अपनों को भी पराया बना देते हैं और मित्रों से शत्रुता उत्पन्न कर लेते हैं। उसके विपरीत जिनकी वाणी में प्रेरणा घुली रहती है, आदर के साथ बोलते हैं नम्रता और सज्जनता का परिचय देते हैं, उनके शत्रु भी देर तक शत्रु नहीं रह सकते, उन्हें प्रतिकूलता छोड़कर अनुकूल बनने के लिए विवश होना पड़ता है।

परिवार के विद्यालय में सज्जनता एवं मधुरता का अभ्यास छोटी आयु से ही बालकों को कराया जाना चाहिए। बड़े–छोटों के साथ आप या तुम कहते हुए सम्मानजनक शब्दों में ही बात करें। प्रताड़ना एवं भर्त्सना भरी बात भी कोई गलती करने पर कही जा सकती है पर वह होनी नम्र और शिष्ट शब्दों में ही चाहिए। गाली–गलौच भरे, मर्मभेदी, व्यंग्यात्मक, तिरस्कारपूर्ण कटु शब्द हर किसी को बुरे लगते हैं। छोटो पर भी उसका बुरा प्रभाव पड़ता है। जिह्वा पर इतना काबू होना चाहिए कि वह आवेश भरे दुष्ट शब्दों को बोलने न पाये। दुष्ट शब्दों की प्रतिक्रिया दुष्टतापूर्ण ही होती है, इससे केवल द्वेष बढ़ता है। कभी इनकार को अवसर आवे तो उसमें भी अपनी असमर्थता नम्र शब्दों में प्रकट होनी चाहिए। कटु शब्दों में इन्कार करने से सामने वाले पर दुहरा प्रहार होता है, और वह भी तिलमिलाकर दुहरी दुष्टता धारण कर लेता है। विवाद, इन्कारी एवं प्रतिद्वन्द्विता में भी शिष्ट भाषा और सामने वाले के सम्मान का ध्यान रखा जाना चाहिए।


अंतहीन संभावनायें – दिव्यांगता मिटाने के लिये विभिन्नआयाम

WORLD OF HUMANITY का निर्माण प्रगति पर.....

अंतहीन संभावनाएं - दिव्यांगता मिटाने के विभिन्न आयाम

चिकित्सा
- निदान (एक्स रे, ओपीडी, लैब)
- उपचार (कृत्रिम अंग और कैलीपर्स)
- पोस्ट ऑपरेटिव केयर (वार्ड, आईसीयू)
- चिकित्सा सहायता (फार्मेसी एवं फिजियोथेरेपी)

स्वावलम्बन
- हस्तकला या शिल्पकला
- सिलाई प्रशिक्षण
- डिजिटल (कंप्यूटर) प्रशिक्षण
- मोबाइल फोन मरम्मत प्रशिक्षण
- नारायण चिल्ड्रन एकेडमी (निःशुल्क डिजीटल स्कूल)

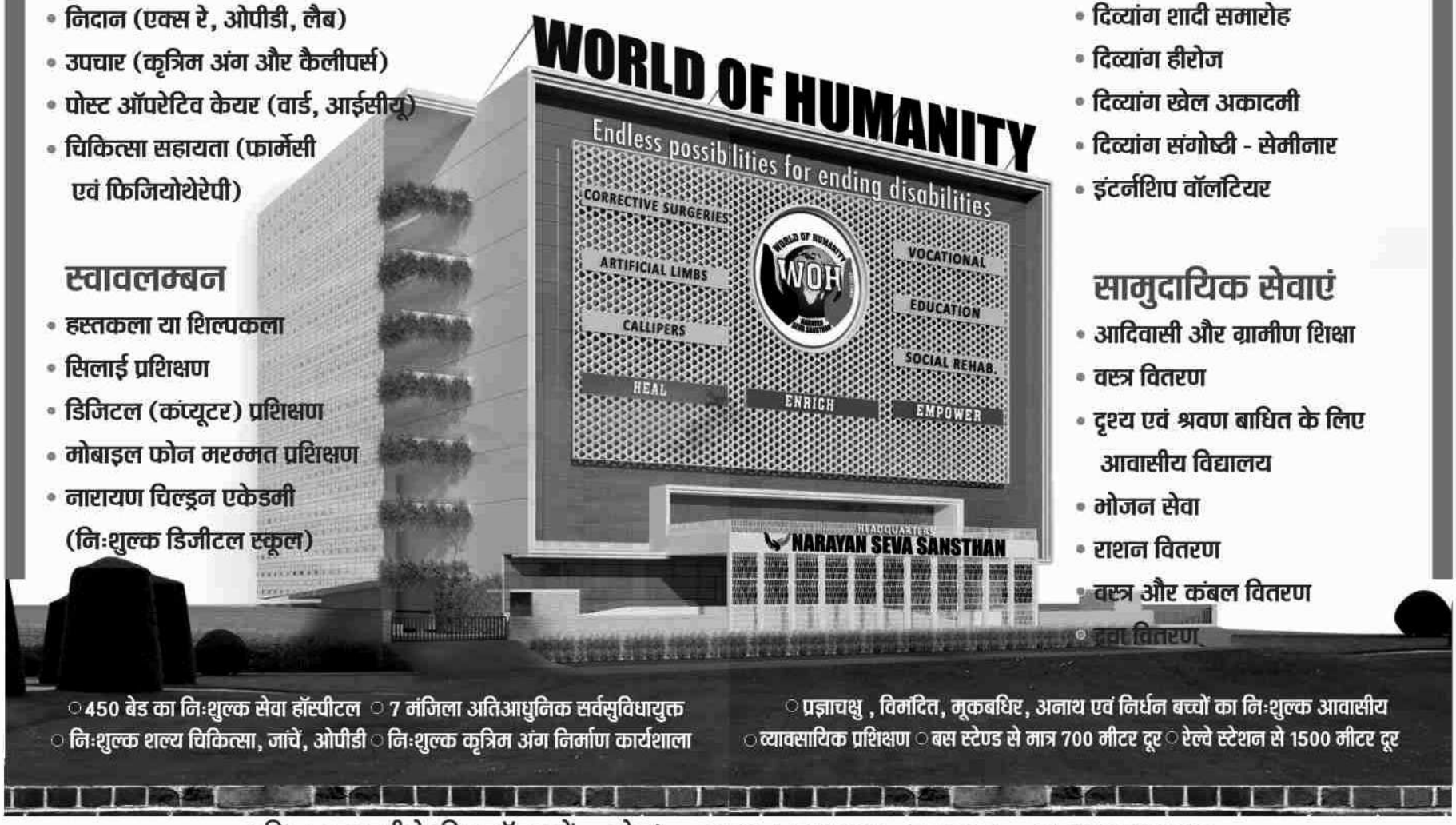


सशक्तिकरण
- दिव्यांग शादी समारोह
- दिव्यांग हीरोज
- दिव्यांग खेल अकादमी
- दिव्यांग संगोष्ठी - सेमीनार
- इंटर्नशिप वॉलंटियर

सामुदायिक सेवाएं
- आदिवासी और ग्रामीण शिक्षा
- वस्त्र वितरण
- दृश्य एवं श्रवण बाधित के लिए आवासीय विद्यालय
- भोजन सेवा
- राशन वितरण
- वस्त्र और कंबल वितरण
- दवा वितरण

○ 450 बेड का निःशुल्क सेवा हॉस्पीटल ○ 7 मंजिला अतिआधुनिक सर्वसुविधायुक्त
○ निःशुल्क शल्य चिकित्सा, जांचें, ओपीडी ○ निःशुल्क कृत्रिम अंग निर्माण कार्यशाला
○ प्रज्ञाचक्षु , विमंदित, मूकबधिर, अनाथ एवं निर्धन बच्चों का निःशुल्क आवासीय
○ व्यावसायिक प्रशिक्षण ○ बस स्टेण्ड से मात्र 700 मीटर दूर ○ रेल्वे स्टेशन से 1500 मीटर दूर

अधिक जानकारी के लिए कॉल करें मो नं. : +91-294-6622222 वाट्सअप : +91-7023509999

## सम्पादकीय

प्रेम एक विराट अनुभूति है। हम इसे सीमित करने के लिए तत्पर हैं। प्रेम यानी समर्पण तथा सद्भाव की पराकाष्ठा। प्रेम के लिए न कोई पात्रता चाहिए और न क्षमता। यदि ऐसा होता तो परमात्मा प्रत्येक जीव से प्रेम कैसे करता? परमात्मा ने हरेक प्राणी को प्रेम की अनुभूति करने का सामर्थ्य दिया है पर अभिव्यक्त करने की कम प्राणियों को ही दक्षता दी है। अल्प विकसित प्राणी संकेतों से, अपने क्रियाकलापों से इस प्रेम को अभिव्यक्त कर सकते हैं। पर मनुष्य को परमात्मा ने प्रेम को अभिव्यक्त करने की पूर्ण क्षमता दी है। वह संकेतों से, क्रियाओं से, भावों से, दुआओं से तथा और भी अनेक प्रकारों से प्रेम को अभिव्यक्त कर सकता है। पर हम मनुष्य भी प्रेम को चराचर के प्रति अभिव्यक्त न करके सीमित मामलों में ही अभिव्यक्त करने के आदी हो गए हैं। इसलिए विश्व का कल्याण हो की भावना कमजोर हो गई है। जैसे–जैसे हमारे प्रेम का दायरा विस्तार पायेगा, वैसे–वैसे सर्वे भवंतु सुखिन' का भाव साकार होने लगेगा। परमात्मा को भी प्रसन्नता होगी कि मानव मेरे द्वारा निदर्शित उद्देश्यों को समझ गया है। तो क्यों न हम प्रभु की दृष्टि में समझदार बनें।

## कुछ काव्यमय

**सारे जीवन जतन कर,**
**पाये क्या इंसान ?**
**ना तो यह दुनिया सधी,**
**ना पाया भगवान।**
**उधेड़बुन में जा रही,**
**जीवन की ये नाव।**
**ज्यों–ज्यों इसको खे रहे,**
**आता क्यों बिखराव।।**
**हमने सोचा जगत में,**
**कुछ पाना ही काम।**
**इसी गलतफहमी भरा,**
**जीवन गया तमाम।।**
**प्रभु को पहचाना नहीं,**
**ना समझे संकेत।**
**स्वारथ या परमार्थ का,**
**उपजा नाहीं चेत।।**
**तो क्या बिरथा जनम है,**
**प्रभु ने दिया धराय।**
**सच्ची शरणागति लहो,**
**जनम सफल हो जाय।।**

**- वरदीचन्द राव,** अतिथि सम्पादक

### अपनों से अपनी बात

## ईर्ष्या का बोझ

एक संत ने अपने शिष्यों को खास शिक्षा देने के लिए कहा कि वे जिससे भी ईर्ष्या करते हैं उनका नाम आलुओं पर लिख कर उन्हें सात दिन अपने पास रखें शिष्यों को कुछ समझ नहीं आया लेकिन संत के आदेश का पालन उन्होंने अक्षरशः किया।

दो–तीन दिनों के बाद ही शिष्यों ने आपस में एक दूसरे से शिकायत करना शुरू किया, जिनके आलू ज्यादा थे, वे बेहद कष्ट में थे। आखिरी दिन संत बोले अब आलुओं की थैलियां निकालकर रख दें। संत ने सात दिनों का अनुभव पूछा? सभी ने अपनी–

अपनी पीड़ा सुनाई। आलुओं की बदबू से होने वाली परेशानी के बारे में बताया। संत बोले कि जब मात्र सात दिनों में ही आपको ये आलू बोझ लगने लगे तो सोचिए कि आप जिन लोगों से ईर्ष्या या नफरत करते हैं, उनका कितना बोझ आपके मन पर होता होगा? सोचिए कि मन और दिमाग की इस ईर्ष्या के बोझ से क्या हालत होती होगी? यह ईर्ष्या तुम्हारे मन पर अनावश्यक बोझ डालती है, उनके कारण तुम्हारे मन में भी बदबू भर जाती है। ठीक उन आलुओं की तरह। इसलिए अपने मन से इन भावनाओं को निकाल दो।

यदि किसी से प्यार नहीं कर सकते तो कम से कम नफरत मत करो, तभी तुम्हारा मन स्वच्छ, निर्मल और हल्का रहेगा।

**–कैलाश 'मानव'**

## अनोखा कर्मचारी

बात 1947 की है। लेस्टर वण्डरमेन नाम का एक व्यक्ति मेक्सवेल सेकिम एण्ड कम्पनी में काम करता था। यह एक विज्ञापन एजेन्सी थी। एक दिन एजेन्सी के मालिक को लगा कि कम्पनी के मुनाफे का अधिकांश हिस्सा तो कर्मचारियों में ही चला जाता है, अगर वह कर्मचारियों की छंटनी कर देगा तो निश्चित ही उसे अधिक फायदा होगा। अपनी योजनानुसार उसने कई कर्मचारियों को निकाल दिया, लेस्टर वण्डरमेन भी उनमें से एक थे।

नौकरी से निकाले जाने के बाद भी वह एजेन्सी में आकर काम करते रहे। दूसरे कर्मचारी अक्सर उनसे कहते – जब तुम्हें यहाँ से निकाल दिया गया है तो फिर, यहाँ काम क्यों कर रहे हो?

"मैं यहाँ बिना तनख्वाह के काम कर रहा हूँ। मुझे लगता है कि मैं इस विज्ञापन एजेन्सी के मालिक से बहुत कुछ सीख सकता हूँ।" वण्डरमेन ने उत्तर दिया।

एजेन्सी के मालिक वण्डरमेन को देखकर भी नजरअंदाज करते रहे। उन्होंने एक महीने तक वण्डरमेन को अनदेखा किया एवं तनख्वाह भी नहीं दी, लेकिन वण्डरमेन ने फिर भी हार नहीं मानी और वे काम करते रहे।

एक दिन हार कर कम्पनी के मालिक वण्डरमेन के पास गए और बोले –मैंने पहले कभी ऐसा व्यक्ति नहीं देखा, जिसे काम तनख्वाह से ज्यादा प्रिय हो।

वण्डरमेन ने वहीं पर काम करके विज्ञापन की अनेकों बारीकियों को सीखा। जब उन्हें वहाँ काम करते–करते बहुत समय बीत गया तो, उन्होंने अपनी समझ और अपने तरीके से विज्ञापन बनाने शुरू कर दिए।

इसके पश्चात् वह विज्ञापन की दुनिया में इस कदर छा गए कि उन्हें इस क्षेत्र में सदी का सबसे सफल व्यक्ति माना गया। आज भी लोग उन्हें 'Father of Direct Marketing' के रूप में जानते हैं। अतः हम सभी को शुरूआती असफलता के बावजूद मेहनत, लगन, आस्था और विवेक के काम करना होगा, क्योंकि सफलता अवश्य मिलेगी।

**–सेवक प्रशान्त भैया**

## झूठा दिखावा

एक युवक की बड़ी कंपनी में नौकरी लगी। पहले दिन जब वह अपने केबिन में बैठा था, तभी एक साधारण से दिखने वाले व्यक्ति ने केबिन का दरवाजा खटखटाया। उसे देखकर युवक ने बाहर बैठकर आधा घंटे इंतजार करने को कहा। आधे घंटे बाद उस व्यक्ति ने पुनः केबिन के अंदर आने की इजाजत मांगी। युवक ने उसे अंदर बुला लिया और फोन पर बात करने लगा। वह फोन पर बात करते वक्त बड़ी–बड़ी डींगें हांकने लगा और अपने पैसे एवं ऐशो आराम की बातें करने लगा। वह व्यक्ति चुपचाप वहां खड़ा उसकी सारी बातें सुन रहा था। कुछ देर बाद युवक ने फोन रखा और उससे पूछा कि तुम यहां क्यों आए हो? उस व्यक्ति ने विनम्र भाव से देखते हुए कहा कि साहब, मैं यहां यह फोन ठीक करने आया हूं। मुझे खबर मिली है कि आप जिस फोन पर बात कर रहे थे, वह हफ्ते भर से खराब पड़ा है। इतना सुनते ही वह युवक शर्म से लाल हो गया और चुपचाप केबिन से बाहर चला गया। उसे समझ आ गया था कि बेकार में झूठा दिखावा करना अच्छा नहीं होता।

## एक सेवाभावी मानव की जीवनी

### (वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित–झीनी–झीनी रोशनी से)

समाज सेवा में उत्कृष्ट कार्य हेतु कैलाश चन्द्र मानव – ज्यूं ही पुकारा गया, कैलाश अपने स्थान से उठा, अपने माता–पिता को मन ही मन नमन किया और राष्ट्रपति की ओर अग्रसर हुआ। कैलाश जब तक वहां पहुंचे तब तक दो तीन पक्तियों में कैलाश के कार्यो का उल्लेख किया गया। कैलाश के राष्ट्रपति के सम्मुख पहुँचते ही फिर उसका नाम लिया गया।

कैलाश का दिल जोरों से धड़क रहा था, अपने आपको संयत करते हुए वह राष्ट्रपति के सामने खड़ा हुआ और दोनों हाथ जोड़कर अभिवादन किया। उस वक्त उसके आश्चर्य की सीमा नहीं रही जब राष्ट्रपति ने उससे बात की और कहा कि मैं आपको व्यक्तिगत बधाई देती हूं। राष्ट्रपति आमतौर पर किसी से बात नहीं कर रही थी सिवाय कुछ नामी –निरामी हस्तियों के। कैलाश भी उनसे कुछ कहना चाहता था मगर वह सिर्फ धन्यवाद फुसफुसा कर रह गया।

अलंकरण समारोह के बाद सभी विजेताओं को राष्ट्रपति तथा प्रधानमंत्री के साथ सामूहिक चित्र लिया जाता है। चित्र में कौन, कहां खड़ा रहेगा इसका भी पूर्व निर्धारण हो जाता है। कैलाश को उसका क्रम तथा स्थान बता दिया गया था। पहली पंक्ति में राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री तथा प्रमुख पुरस्कार विजेता थे। कैलाश को दूसरी पंक्ति में खड़ा किया गया। उसका भाग्य प्रबल था इस कारण उसे एकदम मध्य में खड़ा किया गया। राष्ट्रपति व प्रधानंत्री उसके ठीक आगे थे और इन दोनों के बीच उसने अपना स्थान बना लिया। **अंश-229**

## सेहत के छोटे–छोटे राज

- नींबू का रस लगाने से अथवा आम की गुठली के चूर्ण को पानी में मिलाकर उसे शरीर पर लगाकर स्नान करने से घमौरियां मिटती हैं।
- गर्मी के कारण सिर दर्द हो रहा हो तो धनिया पीसकर लगाने से आराम मिलता है।
- आंवले का 10 ग्राम रस, 10 ग्राम शहद में मिलाकर पीने से एसिडिटी में फायदा मिलता हैं।
- पके हुए बेल(फल) का शर्बत बनाकर पीने से आंव रोग में लाभ होता है।
- मुलहठी का चूर्ण चबाने से मुंह के छालों में राहत मिलती है।
- तुलसी के पत्ती को पीस कर सिर पर लगाने से जुएं मर जाती है।
- एक कप पानी में आधा चम्मच सेंधा नमक मिलाकर रोज सोने से पहले दांतों के सभी प्रकार के रोगों से मुक्ति मिलती है।
- पैर के तलवे तथा अंगूठे में सरसों के तेल से मालिश करने से नेत्र ज्योति बढ़ती है।
- पुदीने की पत्तियों को पीसकर चेहरे पर लगाने से मुंहासे ठीक हो जाते हैं, चेहरा साफ हो जाता है, उसके रस से आंखों के काले घेरे दूर हो जाते हैं।

## अनुभव अमृतम्

राजमल जी भाईसाहब बड़े दुःखी हो गये। उनकी आँखों में आँसूं देखे। मैंने कहा भाईसाहब

**मन के हारे हार हुई है,**
**मन के जीते जीत सदा।**
**सावधान मन हार न जाये,**
**मन से मानव बना सदा।।**

आप क्यो चिंता करते हो? ऐसी जीवन में घटनाएं होती रहती। हजारों होती हैं। आधा घंटा सत्संग चला। भक्त प्रह्लाद जी की बात बतायी, भक्त प्रहलाद जी को कितना कष्ट आया? फिर भी भक्त प्रह्लाद ने चिंता नहीं की तो नृसिंह भगवान प्रकट हुए। डॉ. साहब को भी या जो भी जिन्होंने भी झगड़ा चालू किया है इनके अन्दर भी नर्सिंह भगवान प्रकट हो जायेंगे। रातों रात इनकी मति बदल देंगे। कल सुबह आपसे मिलेंगे तो कहेंगे राजमल जी मैं गलती में था। घंटे भर सत्संग चला सो गये रात को 11:00 बजे। सुबह उठे राजमल जी भाईसाहब ने कहा कैलाश जी यदि आपसे मेरी बातचीत नहीं होती तो मैं सेल्फोज की 10–20 गोलियाँ खा लेता। हे! प्रभु मैंने कहा भाईसाहब आप बड़े हैं। मैंने उनको प्रणाम किया। आप तो हमारे को ताड़ते हैं, आप हमारे को अच्छे मार्ग पर लगाते तो आपकी वजह से मैंने सेवा सीखी है।

सेवा ईश्वरीय उपहार– 109 (कैलाश 'मानव')

## दिव्यांग, अनाथ, असहाय एवं वंचितजन की सेवा में सतत सक्रिय संस्थान के विभिन्न सेवा प्रकल्पों में करें सहयोग

**कृपया अपने परिजनों या स्वयं के जन्मदिन, शादी की वर्षगांठ पुण्यतिथि को बनायें यादगार..**

**जन्मजात पोलियो ग्रस्त दिव्यांगों के ऑपरेशनार्थ सहयोग राशि**

| ऑपरेशन संख्या | सहयोग राशि | ऑपरेशन संख्या | सहयोग राशि |
|---|---|---|---|
| 501 ऑपरेशन के लिए | 17,00,000 | 40 ऑपरेशन के लिए | 1,51,000 |
| 401 ऑपरेशन के लिए | 14,01,000 | 13 ऑपरेशन के लिए | 52,500 |
| 301 ऑपरेशन के लिए | 10,51,000 | 5 ऑपरेशन के लिए | 21,000 |
| 201 ऑपरेशन के लिए | 07,11,000 | 3 ऑपरेशन के लिए | 13,000 |
| 101 ऑपरेशन के लिए | 03,61,000 | 1 ऑपरेशन के लिए | 5000 |

**निर्धन एवं दिव्यांगों को खिलाएं निवाला**

| आजीवन भोजन/नाश्ता सहयोग मिति ( वर्ष में एक दिवस 50 दिव्यांग, निर्धन एवं अनाथ बच्चों के लिए भोजन/नाश्ता सहयोग हेतु मदद करें ) | |
|---|---|
| नाश्ता एवं दोनों समय भोजन सहयोग राशि | 37000/- |
| दोनों समय के भोजन की सहयोग राशि | 30000/- |
| एक समय के भोजन की सहयोग राशि | 15000/- |
| नाश्ता सहयोग राशि | 7000/- |

**दुर्घटनाग्रस्त एवं जन्मजात दिव्यांगों को दें कृत्रिम हाथ-पैर और सहायक उपकरणों का उपहार**

| वस्तु | सहयोग राशि (एक नग) | सहयोग राशि (तीन नग) | सहयोग राशि (पाँच नग) | सहयोग राशि (ग्यारह नग) |
|---|---|---|---|---|
| तिपहिया साईकिल | 5000 | 15,000 | 25,000 | 55,000 |
| व्हील चेयर | 4000 | 12,000 | 20,000 | 44,000 |
| केलीपर | 2000 | 6,000 | 10,000 | 22,000 |
| वैशाखी | 500 | 1,500 | 2,500 | 5,500 |
| कृत्रिम हाथ/पैर | 5100 | 15,300 | 25,500 | 56,100 |

**गरीब दिव्यांगों को बनाएं आत्मनिर्भर**

| मोबाइल /कम्प्यूटर/सिलाई/मेहन्दी प्रशिक्षण सौजन्य राशि | |
|---|---|
| 1 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 7,500 | 3 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -22,500 |
| 5 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 37,500 | 10 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -75,000 |
| 20 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 1,50,000 | 30 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -2,25,000 |

अधिक जानकारी के लिए कॉल करें
मो नं. : +91-294-6622222 वाट्सअप : +91-7023509999
आपके अपने संस्थान का पता
नारायण सेवा संस्थान - 'सेवाधाम', सेवानगर, हिरण मगरी, सेक्टर-4, उदयपुर-313002 (राजस्थान) भारत

## अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

**आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।**

**संस्थान पेन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टैन नम्बर JDHN01027F**

| Bank Name | Branch Address | RTGS/NEFT Code | Account |
|---|---|---|---|
| State Bank of India | H.M.Sector-4 | SBIN0011406 | 31505501196 |
| ICICI Bank | Madhuban | ICIC0000045 | 004501000829 |
| Punjab National Bank | KalajiGoraji | PUNB0297300 | 2973000100029801 |
| Union Bank of India | Udaipur Main | UBIN0531014 | 310102050000148 |

**संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।**

'मन के जीते जीत सदा' दैनिक समाचार-पत्र अब ऑनलाईन साईट पर भी उपलब्ध है
**www.narayanseva.org, www.mannkijeet.com**
**: kailashmanav**

मन के जीते जीत सदा ( दैनिक समाचार-पत्र ) प्रकाशक : कैलाश चन्द्र अग्रवाल स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से. 4, उदयपुर ( राज. ) 313002
मुद्रक : न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर - 3 उदयपुर ( राज. ) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर
• सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. 8278607811, 9119398965 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com • आरएनआई नं. RAJHIN/2014/59353 • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023